बिहार शोध समागम

BIHAR SHODH SAMAAGAM
Multidisciplinary, Multi-Lingual, Peer Reviewed Open Access Journal
issn : 3048-6971
Vol. 2, Issue 4, October-December 2024
Available online : https://www.biharshodhsamaagam.com/

स्वतंत्रता आंदोलन में प्रतिबंधित साहित्य की भूमिका

विजयता दुबे

(पी-एच॰डी॰ शोधार्थी, कलकत्ता विश्वविद्यालय)

साहित्य जीवन की अभिव्यक्ति है अतएव युग विशेष के सामाजिक जीवन की प्रमुख प्रवृतियाँ ही उस युग के साहित्य की प्रमुख प्रवृतियाँ होती हैं। भारतीय राष्ट्रीय स्वाधीनता आंदोलन और भारतीय साहित्य में भी यह सम्बंध रहा है। हमारे स्वतंत्रता संघर्ष के विभिन्न मूल्यों, प्रवृत्तियों और विचारधाराओं का हिंदी साहित्य में काफ़ी अच्छे ढंग से अभिव्यक्ति हुई है। हिंदी साहित्य ने जनता को आजादी के संघर्ष के लिए प्रेरित किया है। अतः इस बात को कहने में कोई दो राय नहीं है कि भारत के स्वाधीनता संग्राम का स्वर जैसे-जैसे तेज होता गया वैसे-वैसे ही हिंदी साहित्यकारों की वाणी और लेखनी भी अपने स्वरूप में प्रखर और विद्रोही होती गई।

सन् 1857 की क्रांति हमारे राष्ट्रीय आंदोलन का मूल प्रेरणास्त्रोत रहा है। इस महान् क्रांति का हिंदी साहित्य पर भी काफ़ी गहरा प्रभाव पड़ा और इस बात को डॉ. रामविलास शर्मा अपनी पुस्तक 'सन् सत्तावन की राज्य क्रांति' में स्वीकारते हैं। भारतेंदु युग के साहित्य में जो राष्ट्रीय चेतना का अंकुर फूटा वह द्विवेदी युग में काफ़ी तेज गति से विकसित हुआ और छायावाद तथा प्रगतिवाद के कालखंडों में शक्तिशाली तथा हराभरा फलदार वृक्ष बनकर उभरा| डॉ. विश्वमित्र उपाध्याय के अनुसार- "भारतीय जनता द्वारा अपनी स्वाधीनता के लिए 1857 में की गई सशस्त्र क्रांति, जिसे अंग्रेजों ने गदर कहा था, हमारा प्रथम स्वाधीनता संग्राम था। इस क्रांति का हिंदी साहित्य पर व्यापक प्रभाव पड़ा। हिंदी गद्य साहित्य में राष्ट्रीय चेतना का अंकुर इसी अवधि में फूटा जो बाद में चल कर विशाल बट वृक्ष बन गया|"-(1) हिंदी के अधिकांश साहित्यकार एवं पत्रकार संघर्षरत जनता और उसकी आकांक्षाओं से जुड़े रहे जिसके फलस्वरूप वे जीवंत साहित्य का सृजन कर सकें हैं। हमारे राष्ट्रीय स्वाधीनता आंदोलन ने हिंदी काव्य को प्रभावित एवं परिष्कृत किया और राष्ट्रीय काव्य साहित्य ने गांधी, नेहरू, सुभाष, भगतसिंह आदि के नेतृत्व में चल रहे मुक्ति संघर्ष को बल दिया। संघर्ष और साहित्य दोनों ने अविच्छिन्न रूप से राष्ट्रीय चेतना का विकास किया। हिंदी काव्य में भारतीय जनता की राष्ट्रीयता एवं स्वाधीनता की प्रवृत्तियां तथा उसकी आर्थिक, सामाजिक मुक्ति की कामना व्यापक एवं सशक्त रूप में अभिव्यक्त हुई है। हिंदी के यशस्वी कवियों ने कायरों तथा देशद्रोहियों की भर्त्सना की तथा भारत माता की स्वाधीनता के लिए बलिदान करने वाले शहीदों और राष्ट्रीय स्वाधीनता आंदोलन

BIHAR SHODH SAMAAGAM
Multidisciplinary, Multi-Lingual, Peer Reviewed Open Access Journal
issn : 3048-6971
Vol. 2, Issue 4, October-December 2024
Available online : https://www.biharshodhsamaagam.com/

में शामिल होकर उसे जुझारू एवं प्रभावी बनाने वाले स्वाधीनता प्रेमियों का मुक्त कंठ से यशोगान किया। इस संदर्भ में डॉ. विश्वामित्र उपाध्याय ने लिखा है- “ये कवितायें जेलों, न्यायालयों, रणक्षेत्रों तथा फांसी के तख्तों की ओर जाते हुए गाई गई हैं। इनमें देशभक्ति तथा शौर्य व बलिदान की भावनायें कूट-कूट कर भरी हुई हैं। यें कवितायें क्रांतिकारियों के विचारों व भावनाओं को सशक्त रूप में अभिव्यक्त करती हैं|”-(2)

‘प्रतिबंधित’ शब्द का अर्थ होता है निषेध, पाबंदी, अवरोध, रोक, बैन, अड़चन, रुकावट, बंदिश, मनाही, अंकुश, नियंत्रण, दबाव, बाधा, निषिद्ध, वर्जित प्रतिबंध, लगाम इत्यादि| साहित्य, भाषण, विदेश यात्रा या कोई अन्य कार्य पर सरकार प्रतिबंध तभी लगती है जब उपरोक्त माध्यम सरकार के विरुद्ध हो, उनकी कुरीतियों तथा काले कारनामों का भंडाफोड़ करे। इस स्थिति में सत्ता बनाए रखने के लिए सरकार ऐसे विरोधी स्वरों को, साहित्यिक रचनाओं को या विदेशी यात्राओं को नियंत्रित करने के लिए सभी तरह की नीति अपनाती है। साहित्य में जब भी कुछ ऐसा लिखा जाता है जिससे जनता जागृत होकर तत्कालीन सरकार के रवैये को या दोषपूर्ण नीति को भलिभांति समझ जाती है और सरकार का विरोध करने लगती है तब सरकार जनता की कार्यवाहियों पर अंकुश तो लगाती ही है साथ ही उसे जिस स्रोत या साहित्य से प्रेरणा मिलती है सरकार उस स्रोत को समाप्त करने में जुट जाती है। इस दृष्टि से प्रतिबंध एक ऐसी प्रशासनिक व राजनीतिक कार्यवाही है जिसमें व्यवस्था द्वारा किसी भी संगठन, सभा, पुस्तक, प्रकाशक इत्यादि को सत्ता के अस्तित्व के प्रति खतरा देखकर सरकार उसे गैर कानूनी या राष्ट्रद्रोही या राजद्रोही घोषित कर उसके खिलाफ़ दमनात्मक कार्यवाही करती है।प्रतिबंधित साहित्य से तात्पर्य उस साहित्य से है जो सरकार के विरुद्ध जनमानस को संगठित कर कार्यवाही करने के लिए प्रेरणा प्रदान करती है। प्रतिबंधित साहित्य का सम्बंध ऐसे साहित्य से है जो सत्ता द्वारा लगाए गए विविध तरह के निषेधों के बावजूद प्रतिरोधी स्वर में अभिव्यक्त होते हैं या फिर प्रशासन द्वारा जिन साहित्यिक रचनाओं पर निषेध का फरमान घोषित किया जाता है वे सब प्रतिबंधित साहित्य के क्षेत्र में सम्मिलित हैं।

बीसवीं सदी के तीसरे दशक के आरंभ से ही भारतीय स्वाधीनता आंदोलन काफ़ी व्यापक, जुझारू और तीव्र हो गया। इस आंदोलन का क्षेत्र अब नगरों तक सीमित न होकर ग्रामीण अंचलों तक विस्तृत हो गया। स्वाधीनता की माँग के साथ-साथ तत्कालीन समय में किसानों, मजदूरों, कारीगरों इत्यादि या कहें आम जनता से जुड़ी समस्याओं की मांगों को उठाया जाने लगा और इसका परिणाम यह हुआ कि छोटे स्तर से लेकर बड़े स्तर तक के साहित्यकार

BIHAR SHODH SAMAAGAM
Multidisciplinary, Multi-Lingual, Peer Reviewed Open Access Journal
issn : 3048-6971
Vol. 2, Issue 4, October-December 2024
Available online : https://www.biharshodhsamaagam.com/

प्रभावित हुए। इन साहित्यकारों ने अपनी रचनाओं में भारतीय जनमानस की भावनाओं को तीखी व ओजपूर्ण भाषा में अभिव्यक्त किया। देश के कोने-कोने में ब्रिटिश सरकार के विरुद्ध कविताएं गाई और सुनाई जाने लगीं। इसका सकारात्मक परिणाम यह हुआ कि इससे हमारे स्वाधीनता संग्राम को काफ़ी बल मिला। ब्रिटिश सरकार ने इन रचनाओं से घबराकर अनेक काव्य संग्रहों, लेखों, निबंधों, पोस्टरों इत्यादि को प्रतिबंधित करना आरंभ कर दिया। अनेक भारतीय भाषाओं में प्रतिबंधित साहित्य की रचना हुई। डॉ. विश्वमित्र उपाध्याय के अनुसार- “भारतीय राष्ट्रीय अभिलेखागार में रखे गए इन प्रतिबन्धित गद्य-संग्रहों में असमी की 8, बंगला की 44, अंग्रेजी की 89, गुजराती की 39, हिंदी की 138, कन्नड़ की 4, मलयालम की 3, मराठी की 55, उड़िया की 2, पंजाबी की 92, सिंधी के 11, तमिल की 31, तेलुगु की 20 और उर्दू की 68 कृतियां संग्रहीत हैं|”-(3) इन गद्य-संग्रहों के जरिए ब्रिटिश साम्राज्य के शोषक, निरंकुश तथा क्रूर स्वरूप का पर्दाफाश किया गया तथा लोगों को यह प्रेरणा दी गई कि भारत माता को गुलामी की बेड़ियों से मुक्त कराने के लिए और अधिक संघर्ष एवं जुझारूपन की आवश्यकता है। इन प्रतिबंधित रचनाओं में सन् 1919 में हुए ‘जलियावाला बाग हत्याकांड’ से लेकर सन् 1942 तक ‘भारत छोड़ो आंदोलन’ से संबंधित सभी घटनाओं का वर्णन काफ़ी अच्छे ढंग से हुआ है।

हम यहां स्वतंत्रता आंदोलन में प्रतिबंधित साहित्य की भूमिका का आलोचनात्मक मूल्यांकन मुख्यतः दो संदर्भों में करेंगे- पहला प्रतिबंधित गद्यात्मक साहित्य का योगदान एवं दूसरा प्रतिबंधित पद्यात्मक साहित्य का योगदान|

(क) प्रतिबंधित गद्यात्मक साहित्य का योगदान-

आगरा जिला कांग्रेस कमेटी ने ‘आगरा सत्याग्रह संग्राम’ का प्रकाशन करके स्वतंत्रता आंदोलन में अहिंसा और सत्याग्रह की गांधीवादी रणनीति को बढ़ावा दिया। कानपुर नेशनल प्रेस ने रामनारायण अग्रवाल की रचना ‘गुलाम संतानों के नाम स्वर्ग से पुरखों की चिट्ठी’ के जरिए स्वतंत्रता संघर्ष एवं स्वाधीनता के लिए मर मिटने का आह्वान किया। दिसंबर 1934 में लाहौर से एक पत्रिका ‘अलंकार’ को ब्रिटिश सरकार ने प्रतिबंधित कर दिया क्योंकि इसमें ब्रिटिश हुकूमत के खिलाफ़ लेख प्रकाशित हो रहे थे। डॉ. सहगल एंड सन्स द्वारा ‘असहयोग का वृक्ष और महात्मा गांधी’ नामक पोस्टर प्रकाशित किया गया जिसमें गांधी जी द्वारा विस्तारित असहयोग आंदोलन एवं उसके बढ़ते प्रभाव की प्रशंसा की गई थी। बनारस के चौधरी एंड सन्स ने मुनीश्वर दत्त अवस्थी द्वारा रचित पुस्तक ‘बागी की बेटी’ का प्रकाशन किया जिसमें राष्ट्रीयता

BIHAR SHODH SAMAAGAM
Multidisciplinary, Multi-Lingual, Peer Reviewed Open Access Journal
issn : 3048-6971
Vol. 2, Issue 4, October-December 2024
Available online : https://www.biharshodhsamaagam.com/

एवं स्वतंत्रता संघर्ष से प्रेरित एवं प्रेरणा देने वाली कहानियों का संग्रह किया गया। इसी प्रकार 'बलिदान' पत्रिका के जरिए गुरु अर्जुन देव की उपलब्धियां प्रकाशित की गई जिसमें महत्वपूर्ण योगदान लाहौर के सत्यकाम विद्यालंकार और भीमसेन वर्मा का था।आगे चलकर इस पत्रिका के जरिए अनेक कविताएं यथा- वीर मंदिर, बहन की राखी, उठ जाग, कीर्तिमान बलिदान छपी जिसमें स्वतंत्रता संघर्ष के स्वर विद्यमान थे। बी.एल. भार्गव ने भगत सिंह और सुखदेव का गुणगान करते हुए 'दो माई के लाल पिंजरे में' का प्रकाशन किया। 'रण निमंत्रण' नबाबगंज कांग्रेस कमेटी द्वारा प्रकाशित किया गया जिसमें भारतवासियों को एकजुट होकर नमक सत्याग्रह में भाग लेने की अपील की गई। 'काकोरी की भेंट' की रचना लक्ष्मण पाठक ने की जिसमें रामप्रसाद बिस्मिल के स्वतंत्रता संघर्ष को दर्शाया गया। काशी सत्याग्रह संगम ने ब्रिटिश न्यायालय पर अपना संदेह प्रकट करते हुए 'ब्रिटिश अदालत बहिष्कार दिवस' का प्रकाशन किया। चतुरसेन शास्त्री द्वारा नवम्बर 1928 में 'चाँद' पत्रिका में फांसी अंक में फांसी की भेंट चढ़े क्रांतिकारियों के योगदान का मूल्यांकन किया। इस पत्रिका में भगतसिंह के भी लेख छपे थे। इस दृष्टि से हिंदी के प्रतिबंधित साहित्य में 'चाँद' एक 'माइलस्टोन' है। इस संदर्भ में डॉ. विश्वमित्र उपाध्याय ने लिखा है- "इसमें (चाँद में) अमर शहीद करतार सिंह सराबा पर भगत सिंह का लेख प्रकाशित किया गया है। 'चाँद' का फांसी अंक हिंदी पत्रकारिता में मील का पत्थर है। इस अंक में 'फांसी' और 'डायर' आदि कवितायें भी छपी है। 'फांसी' कविता के कवि का नाम एक राष्ट्रीय आत्मा है, जो निश्चय ही माखनलाल चतुर्वेदी है|"-(4)

'कांग्रेस बुलेटिन' के जरिए किसानों को लगान न देने के लिए प्रेरित किया गया साथ ही साथ कांग्रेस को साम्राज्यवाद विरोधी संस्था बनाने का आह्वान भी किया गया। ब्रिटिश सरकार ने यह देखते हुए इसके दस अंक जब्त कर लिए| देवनारायण द्विवेदी ने किसानों की समस्या और उसका समाधान अपनी पुस्तक 'किसान सुख साधन' के जरिए पेश किया। कलकत्ता के देव चित्रालय ने अंग्रेजों द्वारा भारत पर किए गए आर्थिक शोषण को 'देश-दशा चित्रावली' में चित्रित किया। 'देश के नौजवान क्या करें' कानपुर स्टुडेंट्स यूनियन द्वारा प्रकाशित की गई थी जिसमें भारतीय युवकों को भारत के स्वतंत्रता संघर्ष में भाग लेने के लिए आह्वान किया गया। हर्षदेव ने अपनी पुस्तक 'किसान श्रेणी सजग हो' के जरिए कृषकों से एकजुट होकर ब्रिटिश हुकूमत के विरुद्ध मुक्ति संघर्ष में सम्मिलित होने की अपील की। इसी तरह 'इन्कलाब जिन्दाबाद' में भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में उतरने का आह्वान किया गया। 'जतीन्द्रनाथ की

संक्षिप्त जीवनी' के जरिए गोरखपुर के शिवचरण गुप्त ने क्रांतिवीर यतीन्द्रनाथ दास केक्रांतिकारी जीवन का विवरण प्रस्तुत किया। 'खून का बदला खून' में चन्द्रशेखर आजाद की हत्या का इंतकाम लेने का संकल्प एवं आह्वान किया गया। 'बेड़ी के गीत' में प्रसाद द्विवेदी ने शहीदों के योगदान पर लिखा था- 'कुछ कहते थे उसको पागल हां सचमुच ही दीवाना था, जो जली शमा आज़ादी की हां उसका ही परवाना था|"(5)

'अंग्रेजों से मेरी अपील' और 'काली करतूतें' में मुख्यतः गांधी जी द्वारा लिखे गए लेखों का संग्रह किया गया है। रघुनाथ प्रसाद पारसी ने 'युवक और स्वाधीनता' के जरिए भारतीय स्वतंत्रता संघर्ष में युवकों की प्रभावकारी भूमिका को उजागर किया है। ऋषिचरण गुप्त ने 'गदर' उपन्यास की रचना की जिसमें प्रमुख क्रांतिकारी पात्रों का चरित्र चित्रण किया गया है। इमदाद साबरी ने 'नेता जी के साथी' की रचना की जिसमें सुभाषचंद्र बोस के साथ योगदान देने वाले क्रांतिवीरों की प्रशंसा की। भगत सिंह के स्वतंत्रता संघर्ष में योगदान को सराहते हुए के.एल. गुप्त ने 'सरदार भगतसिंह' नामक पुस्तक की रचना की। 'भारत के दो महात्मा' के जरिए धर्मेन्द्रदेव शर्मा ने राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के जीवन दर्शन का आलोचनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया। पांडे बेचन शर्मा 'उग्र' ने 'क्रांतिकारी कहानियां' में स्वतंत्रता संघर्ष से प्रेरित उत्साहवर्धक कहानियां लिखीं। गोरखपुर से प्रकाशित होने वाले पत्र 'स्वदेश' के कई अंकों को अंग्रेज सरकार ने जब्त कर लिया। इस पत्र के मुख्य पृष्ठ पर लिखा था-

"जो भरा नहीं है भावों से,
जिसमें बहती रसधार नहीं,
वह हृदय नहीं वह पत्थर है,
जिसमें स्वदेश का प्यार नहीं|"

शंकरलाल तिवारी ने अपनी पुस्तक 'भारत सन् 57 के बाद' में स्वाधीनता आंदोलन का काफ़ी सुक्ष्म दृष्टि से विश्लेषण किया और आगे चलकर इन्होंने एक पुस्तक लिखी 'संसार की भीषण राज्य क्रांतियां' जिसके जरिए उन्होंने भारतीयों को अन्य देशों की क्रांतियों से प्रेरणा लेने को कहा। एस.पी. त्रिपाठी ने अपनी पुस्तक 'औपनिवेशिक प्रश्न में' के जरिए ब्रिटिश सरकार के शोषक एवं निरंकुश स्वरूप का पर्दाफाश किया साथ ही भारत की स्वतंत्रता की मांग को काफ़ी बल दिया। सन् 1939 में यशपाल द्वारा संपादित पत्रिका 'विप्लव' को अंग्रेजों ने जब्त कर लिया। इसमें राष्ट्रप्रेम व ब्रिटिश विरोधी कविताएं छपी थीं। इस पत्रिका में प्रभाकर माचवे की

BIHAR SHODH SAMAAGAM
Multidisciplinary, Multi-Lingual, Peer Reviewed Open Access Journal
issn : 3048-6971
Vol. 2, Issue 4, October-December 2024
Available online : https://www.biharshodhsamaagam.com/

कविता 'शनिचर' छपी थी जिसमें मजदूरों की करुणामय स्थिति को दर्शाया गया था। इसके अतिरिक्त मदनमोहन मालवीय की पुस्तक 'भारत में दमन', शिवनारायण टंडन की 'बोल्शेविक रुस', आचार्य किशोरीदास, वाजपेयी की 'वीभत्स रस' इत्यादि पुस्तकें जब्त कर ली गई। समाचार पत्रों में प्रताप, सैनिक, अभ्युदय, विश्वमित्र, महारथी, स्वदेश, कर्मवीर इत्यादि को भी सरकारी दमन का प्रकोप झेलना पड़ा। अतः हम कर सकते हैं कि उपरोक्त रचनाओं ने राष्ट्रीय चेतना फैलाने तथा राष्ट्रीय स्वाधीनता संग्राम के संदेश को भारत के कोने-कोने तक पहुंचाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। यहाँ एक बात और ध्यान देने योग्य है कि इन साहित्यकारों एवं पत्रकारों ने सत्याग्रह, सविनय अवज्ञा आंदोलन एवं सशस्त्र क्रांति दोनों की ही सराहना की और दोनों का ही संदेश भारतीय जनता तक पहुंचाया। अतः हम कह सकते हैं कि इन पत्र-पत्रिकाओं में जहाँ गांधी जी की नीतियों का पालन किया जाता था तो वहीं नेता जी एवं भगतसिंह के मार्गों का भी अनुसरण किया जाता था।

(ख) प्रतिबंधित पद्यात्मक साहित्य का योगदान-

स्वतंत्रता संघर्ष की अवधि में जितने भी काव्य संकलन जब्त किए गए थे उनमें साम्राज्यवाद विरोधी तत्व शामिल थे। इन काव्य संकलनों ने जनता की राजनीतिक, आर्थिक चेतना को जगाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया और पूर्ण स्वतंत्रता प्राप्ती के लिए लोगों के मन में प्रेरणा का दीप जलाया। प्रतिबंधित काव्य संकलनों के कवियों ने अपनी कविताओं में कांग्रेस जनों, कम्युनिस्टों, क्रांतिकारियों इत्यादि की राजनीतिक विचारधाराओं को व्यक्त किया। इन्होंने बाल गंगाधर तिलक, मोतीलाल नेहरू, महात्मा गांधी, जवाहरलाल नेहरू, सुभाष चंद्र बोस, भगतसिंह, सुखदेव, राजगुरु, चंद्रशेखर आजाद आदि स्वाधीनता प्रेमियों का अपने काव्य में गौरवपूर्ण गुणगान किया। इन कविताओं में मजदूरों और किसानों को संगठित होकर राष्ट्रीय मुक्ति आंदोलन में सम्मिलित होने का आह्वान किया गया था। देश के कोने-कोने में असंख्य काव्य लिखे गए जिसके संदर्भ में डॉ. विश्वमित्र उपाध्याय ने लिखा है- "इनमें बंगाली के 4, गुजराती के 22, हिंदी के 264, कन्नड़ के 3, मराठी के 33, उड़िया का 1, पंजाबी के 22, सिंधी के 9, तमिल के 19, तेलुगु के 10 और उर्दू के 58 काव्य संग्रह हैं|"-(6) उपरोक्त आँकड़ों से यह सिद्ध होता है कि स्वाधीनता आंदोलन के समय जितनी रचनाएँ हिंदी भाषा में लिखी गई उतनी किसी अन्य भारतीय भाषाओं में नहीं। 'स्वराज की गूंज' नामक पुस्तक में 'सरफरोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है' शीर्षक कविता संग्रहीत है जिसने क्रांतिकारियों के साथ-साथ आम जनता के हृदय में भी देशप्रेम को जागृत करने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की| सुभद्राकुमारी

BIHAR SHODH SAMAAGAM
Multidisciplinary, Multi-Lingual, Peer Reviewed Open Access Journal
issn : 3048-6971
Vol. 2, Issue 4, October-December 2024
Available online : https://www.biharshodhsamaagam.com/

चौहान की सुप्रसिद्ध कविता 'आजादी की देवी' मोहर चंद 'मस्त' द्वारा सम्पादित 'फौजी ऐलान' में छपी जिसमें रानी लक्ष्मीबाई का स्वतंत्रता संघर्ष में योगदान का गौरवपूर्ण गुणगान किया गया था, यथा-

बुन्देले हर बोलों के मुख हमने सुनी कहानी थी
खूब लड़ी मर्दानी वो तो झांसी वाली रानी थी||

आर. एन. शर्मा द्वारा संपादित पुस्तक 'भारत माता के जख्मी लाल' नामक पुस्तक में प्रसिद्ध कवि इकबाल द्वारा रचित सुप्रसिद्ध राष्ट्रीय गीत 'सारे जहां से अच्छा हिन्दोस्तां हमारा' के जरिए भारत का गौरवगान किया गया। इसी प्रकार गंगाराम सिंह की पुस्तक 'गरीबों की राह में' स्वदेशी वस्तुओं के अपनाने पर बोल दिया गया। चन्द्रिका प्रसाद जिज्ञासु की पुस्तक 'स्वतंत्र भारत का सिंहनाद' में स्वराज पर बल दिया गया। हुलास वर्मा की पुस्तक 'क्रांति गीतांजलि' की कविता 'बलिदान आह्वान' में भारत की स्वतंत्रता एवं साथ ही साथ हिन्दु-मुसलमान की एकता पर बल दिया गया। यतन लाल ने अपनी पुस्तक 'राष्ट्रीय शंखनाद' के जरिए साइमन कमीशन का विरोध किया और भारतीयों को अहिंसा के पथ पर चलने के लिए प्रेरित किया। गोविंदराम गुप्त 'रहबर' ने अपनी पुस्तक 'सरोजनी संदेश' में कांग्रेस अध्यक्ष जवाहर लाल नेहरू का गुणगान करते हुए उन्हें गरीब जनता का नेता कहा। बेनीमाधव गुप्त ने अपनी पुस्तक 'राष्ट्रीय गीत' में संकलित कविता 'गांधी महिमा' के जरिए महात्मा गांधी को भारत की राष्ट्रभूमि की शान कहा। रामविलास अवस्थी की पुस्तक 'सुलह और राष्ट्र पुकार' में संकलित कविता 'शहीद भगतसिंह' के जरिए भगतसिंह को राष्ट्र का अभिमान कहा गया। यथा-

भारत के लिए तू हुआ बलिदान भगत सिंह।
था तुझको मुल्को-कौम का अभिमान भगत सिंह||

एन.के. शर्मा ने अपनी पुस्तक 'स्वराज्य का तूफान' के जरिए महात्मा गांधी के अनुयायियों की प्रशंसा की तथा स्वदेशी को बढ़ावा देने वाले नेताओं का गुणगान किया। प्रहलाद पाण्डेय की कविता 'हम करेंगे या मरेंगे' 'तूफान' पुस्तक में छपी जिसका प्रमुख उद्देश्य था देश में जागरण के जरिए प्रगतिशीलता एवं क्रांति और अंततः स्वतंत्रता| आर.एन. शर्मा की पुस्तक 'राष्ट्रीय मल्हारें अथवा जख्मी भारत' पुस्तक में संकलित कविता 'पंचरंगी चोला' स्वाधीनता प्रेमियों के बीच काफी लोकप्रिय हुई क्योंकि इसमें एक साथ क्रांतिकारी शहीद यतीन्द्रनाथ दास और महात्मा गांधी दोनों का यशोगान किया गया और कहा गया कि दोनों का रंग एक ही था| यथा-

मेरा रंग दे पंचरंगी चोला माँ रंग दे पंचरंगी चोला।

इसी रंग में रंग के शिवा ने मां का बन्धन खोला||
इसी रंग में यतीन्द्रदास ने अपना चोला छोड़ा।
इसी रंग में सत्यवती ने जेल का फाटक खोला||
इसी रंग में गांधी ने नमक पर धावा बोला।
यही रंग अब्बास तैयब ने जेल में जा के घोला||

मतवाला मंडल द्वारा प्रकाशित पुस्तक 'राष्ट्रीय गीत' में संकलित कविता भारत का भार उतारेंगे' में गांधी जी के सविनय अवज्ञा आंदोलन अर्थात् दाण्डी यात्रा की प्रशंसा की गई। सत्यनारायण धौरिया द्वारा प्रकाशित पुस्तक 'शहीदों की यादगारी भाग-2' की रचना 'भगत सिंह में' भगत सिंह, राजगुरु, बिस्मिल, चंद्रशेखर आदि शहीदों का यशोगान किया गया। सूरजलाल की पुस्तक 'अटल राज की कूंजी' की कविता 'निहत्थों पर' के जरिए समाचार पत्रों पर लगाए गए प्रतिबंधों का विरोध किया गया तथा प्रेस की स्वतंत्रता की मांग की गई। इसके साथ ही साथ इस पुस्तक में अंग्रेजी शासन एवं उनके अत्याचार को समाप्त करने के लिए संकल्प लिया गया। 'मजदूर झंडे की प्रार्थना और आह्वान' पुस्तक में सूर्य प्रसाद अवस्थी ने कविताएं लिखीं जिसमें सोये भारत को जगाने और क्रांति के लिए आह्वान किया गया।

सन् 1920 से लेकर स्वतंत्रता प्राप्ती तक स्वाधीनता आंदोलन काफी तेज व व्यापक हो गया। क्रांतिकारियों ने अपनी अदम्य शक्ति, साहसपूर्ण गतिविधियों और बलिदानों से भारतीय जनता में अभूतपूर्व जागृति, आत्मविश्वास और शक्ति उत्पन्न की| परिणामस्वरूप साहित्यकारों ने राष्ट्रीय एवं क्रांतिकारी साहित्य का सृजन किया। इन रचनाओं का साम्राज्यवाद विरोधी स्वर काफी तीव्र और दमदार था और साथ ही साथ इनमें गजब की स्पष्टवादिता थी| प्रतिबंधित साहित्य के कवियों ने सत्याग्रह आंदोलनों, नमक कानून तोड़ने तथा लगान ना देने के आंदोलनों, सरकारी दमन, सत्याग्रहियों का जेल जाना, क्रांतिकारियों के योगदानों व बलिदानों इत्यादि को अपनी रचनाओं का मुख्य विषय बनाया। इस प्रतिबंधित साहित्य का प्रभाव यह हुआ कि लाखों हजारों भारतीयों ने मुक्ति संघर्ष में योगदान देने का निर्णय किया। इस प्रतिबंधित साहित्य का आयाम केवल स्वाधीनता आंदोलन की राजनीतिक दृष्टि से ही महत्व नहीं रखता अपितु इसमें स्वाधीनता आंदोलन के आर्थिक, सामाजिक दृष्टिकोण भी उजागर होते हैं। अंग्रेज सरकार इन प्रतिबंधित साहित्यकारों की स्पष्टवादी रचनाओं से घबरा कर उसे प्रतिबंधित कर दिया। अनेक जन साहित्यकारों व पत्रकारों को गिरफ्तार कर उन्हें जेल में बंद कर दिया गया तथा उन्हें तरह-तरह की यातनाएं दी गई। अंग्रेजों ने बहुतायात संख्या में प्रेस जब्त कर लिए। ब्रिटिश

BIHAR SHODH SAMAAGAM
Multidisciplinary, Multi-Lingual, Peer Reviewed Open Access Journal
issn : 3048-6971
Vol. 2, Issue 4, October-December 2024
Available online : https://www.biharshodhsamaagam.com/

शासन ने समय-समय पर अनेक कानून एवं विधियां लागू की और साहित्यिक रचनाओं या गतिविधियों को प्रतिबंधित करने के लिए निम्नलिखित मानदंड तय किया। यथा-

i. अंग्रेजी सरकार के दमन और शोषण के खिलाफ़ लिखी जाने वाली कोई भी रचना या लेख प्रकाशित नहीं होगा।
ii. यदि कोई रचना 1857 के आंदोलन के समर्थन में लिखी गई हो तो उसका प्रकाशन नहीं किया जाएगा।
iii. यदि कोई साहित्य स्वाधीनता आंदोलन से प्रेरित होकर लिखा गया है तो उसका प्रकाशन नहीं होगा।
iv. मार्क्सवाद या रूसी क्रांति से प्रभावित होकर जो लेख लिखे गए हैं उनका प्रकाशन नहीं किया जाएगा|
v. जो साहित्य मातृभाषा में लिखे गए हैं उनका भी प्रकाशन नहीं किया जाएगा।

ब्रिटिश सरकार के उपरोक्त मानदंडों से यह सिद्ध होता है कि ब्रिटिश सरकार की मंशा थी कि जनता इन लेखों को पढ़कर ब्रिटिश सरकार के खिलाफ़ आंदोलन न कर दे। इसलिए ब्रिटिश सरकार ने ब्रिटिश हुकूमत के विरुद्ध लिखी जा रही रचनाओं को प्रतिबंधित किया। ब्रिटिश सरकार को यह भी भय था कि यदि उपरोक्त रचनाएं- पुस्तक, पत्रिका, लेख, समाचार पत्र यदि विश्व के कोने-कोने तक पहुंच गई तो ब्रिटिश के काले कारनामों का भंडाफोड़ हो जाएगा इसलिए उन्होंने भारतीय प्रेस व साहित्य के प्रति दमनात्मक रवैया अपनाया। राजीव अहीर के अनुसार- “अंग्रेजी हुकूमत के अधिकारी इस बात से भयभीत थे कि यदि ये समाचार-पत्र लंदन पहुंच गये तो उनके काले कारनामों का भंडाफोड़ हो जाएगा। इसलिये उन्होंने प्रेस के प्रति दमन की नीति अपनाने का निश्चय किया|”-(7)

प्रतिबंधित साहित्य हमारे राष्ट्रीय साहित्य की अमूल्य निधि है। प्रतिबंधित साहित्यकारों ने जिस हिम्मत एवं स्पष्टता से ब्रिटिश हुकूमत के विरुद्ध आवाज उठाई उतनी हिम्मत हिंदी के सुप्रसिद्ध एवं विख्यात साहित्यकारों ने भी नहीं दिखायी। प्रतिबंधित साहित्य स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान मुक्ति की चेतना जगाने का प्रमुख स्त्रोत था और वर्तमान समय में इतिहास को समझने का यह प्रमुख स्रोत है किंतु विडम्बना यह है कि वर्तमान समय में हिंदी साहित्य के क्षेत्र में प्रतिबंधित साहित्य का उचित मूल्यांकन नहीं किया गया है। इस संबंध में प्रख्यात आलोचक डॉ. मैनेजर पाण्डेय ने लिखा है- “हिंदी में प्रतिबंधित साहित्य के ऐतिहासिक महत्त्व

पर विचार की प्रवृत्ति बहुत दुर्लभ है। जिन लेखकों ने पाबंदी, मुकदमा और जेल का खतरा उठाकर साहस के साथ ऐसी रचनाएं लिखीं, जो प्रतिबंधित थी, उनके महत्त्व की पहचान करना आलोचना का एक राष्ट्रीय दायित्व है|”-(8)

प्रतिबंधित साहित्य सम्बंधित साहित्यकार यूँ तो कोई बहुत बड़े एवं प्रसिद्ध लेखक तो नहीं थे किंतु स्थानीय तौर पर वे काफी लोकप्रिय थे क्योंकि वे अपनी रचनाओं में जनभाषा का प्रयोग करते थे। ऐसा बिल्कुल नहीं है कि तत्कालीन प्रतिबंधित साहित्य सम्बंधित साहित्यकार एवं प्रकाशक ब्रिटिश सरकार विरोधी रचनाओं के खतरों को भापते नहीं थे। उन्हें यह अच्छी तरह ज्ञात था कि उनके साथ व उनकी रचनाओं के साथ कैसा व्यवहार किया जाएगा। किंतु उन्होंने अपनी निर्भिकता का परिचय देते हुए देश के हित में साहित्य सृजन किया| ब्रिटिश सरकार उनके प्रकाशनों को जब्त करती और साहित्यकारों को सरकारी यातनाओं, प्रताड़नाओं का शिकार होना पड़ता। उन्होंने जब जनता को जागरुक करने हेतु ब्रिटिश हुकूमत के विरुद्ध कलम उठायी तो उसे प्रतिबंधित कर दिया गया। वर्तमान समय में भारतीय संग्रहालयों में प्रचुर मात्रा में पुस्तकें ऐसी हैं जिनपर ध्यान देने की आवश्यकता है, उन पर शोध करने की ज़रूरत है। जिस दिन ये किताबें पुनः प्रकाशित होकर भारतीय जनता के बीच पढ़ी जाएंगी उस दिन से लोगों का साहित्य के इतिहास को देखने, पढ़ने और लिखने का नज़रिया अवश्य ही बदलेगा। वैसे तो हिंदी साहित्य का इतिहास लिखने वाले लोगों ने हिंदी साहित्यकारों की साहित्यिकता का मूल्यांकन तो काफ़ी जोर-शोर से किया किंतु प्रतिबंधित साहित्य का उचित मूल्यांकन नहीं किया। प्रतिबंधित साहित्य के साथ सबसे बड़ी त्रासदी यह हुई कि युगीन प्रवृत्तियों के मूल्यांकन करने के दौरान उसकी सबसे ज्यादा उपेक्षा हुई। यह देखकर आश्चर्य होता है कि हिंदी साहित्य के इतिहास में आधुनिक काल के अंतर्गत अंग्रेजीराज के दौरान प्रतिबंधित हिंदी साहित्य का कोई विवरण देखने को नहीं मिलता। ऐसी स्थिति में प्रतिबंधित साहित्य के विश्लेषण और मूल्यांकन की उम्मीद कैसे की जाए? जो साहित्यकार साहित्य को इतिहास के ऊपर तवज्जो देते हैं वे भी उन कविताओं, उपन्यासों, कहानियों और नाटकों पर अपना ध्यान केंद्रित नहीं करते जिन पर प्रतिबंध लगा था| इसलिए यह अतिआवश्यक है कि उनके विश्लेषण और मूल्यांकन के बाद ही उनकी साहित्यिकता तय की जाए। यदि हम भी अंग्रेजों की तरह मानसिकता रखकर इस साहित्य की उपेक्षा करेंगे तो हिंदी साहित्य एक अमूल्य साहित्य निधि से वंचित रह जाएगा। हिंदी साहित्य के इतिहास और हिंदी साहित्य की आलोचना दोनों ही क्षेत्रों में प्रतिबंधित साहित्य की उपेक्षा की गई है। प्रतिबंधित साहित्य को प्रथम अंग्रेजों का शिकार होना पड़ा तत्पश्चात्

हिंदी साहित्य के इतिहासकारों ने ही उसे निम्न कोटि में लाकर खड़ा कर दिया। इस संदर्भ में डॉ. मैनेजर पाण्डेय ने लिखा है- "स्वाधीनता आन्दोलन के दौरान आन्दोलन के पक्ष में प्रेरणादायी साहित्य लिखने वालों को दोहरा दण्ड मिला, अंग्रेजी राज ने उन रचनाओं पर प्रतिबन्ध लगाकर दंडित किया, तो हिंदी साहित्य के इतिहासकारों ने उन्हें उपेक्षा का दण्ड दिया|"-(9) साहित्य के इतिहास के मूल्यांकन के दौरान सबसे बड़ी चूक यह हुई कि हमने हिंदी साहित्य को भारतेंदु युग, द्विवेदी युग, छायावाद, प्रगतिवाद, प्रयोगवाद इत्यादि वादों एवं युगों में मूल्यांकित किया किन्तु इन सभी विचारधाराओं के साथ प्रतिबंधित साहित्य कंधे से कंधा मिलाकर चल रही थी और हमने इसे क्षणभर में झटक दिया। तब से प्रतिबंधित साहित्य कई संग्रहालयों में समय बीतने के साथ-साथ केवल धूल की परतों से ढ़कता चला जा रहा है और विडंबना तो यह है कि वर्तमान समय में भी प्रतिबंधित साहित्य के ऊपर जमीं धूल को हटाकर उसके मूल्य को समझने की कोशिश नहीं की जा रही है। लेखक चाहे भारतेंदु युग के हो या फिर द्विवेदी युग के या फिर प्रतिबंधित साहित्य के सबका एक ही लक्ष्य था देश की स्वतंत्रता तथा भारतीय जनता की स्थिति में सुधार तो फिर सफलता का श्रेय कुछ खेमों को ही क्यों? प्रतिबंधित साहित्य भी हिंदी साहित्य की सफलता में प्रबल दावेदार है। स्वाधीनता की चेतना और साम्राज्यवाद का विरोध इस साहित्य का मुख्य लक्ष्य था| यह साहित्य जनमानस का अनिवार्य अंग था और बिना इसे मूल्यांकित किए हम भारतीय जनमानस की चेतना को समझ नहीं सकते। इसके लिए ज़रूरी है कि प्रतिबंधित साहित्य पर मेहनत, लगन व गंभीरता के साथ काम हो। प्रतिबंधित साहित्य का अभी भी बहुत सा हिस्सा ऐसा है जो पाठकों, इतिहासकारों, शोधार्थियों और आलोचकों की पहुँच से दूर है। प्रतिबंधित साहित्य के क्षेत्र में डॉ. विश्वमित्र उपाध्याय (भारतीय क्रांतिकारी आन्दोलन और हिंदी साहित्य), रामजन्म शर्मा (जब्तशुदागीत आजादी और एकता के तराने), रुस्तम राय (प्रतिबंधित साहित्य), मदन लालकांत (स्वाधीनता संग्राम के क्रांतिकारी साहित्य का इतिहास) इत्यादि ने उल्लेखनीय कार्य किया है।

स्वाधीनता आंदोलन के दौरान क्रांतिकारी साहित्य का बहुत बड़ा हिस्सा लोक साहित्य से जुड़ा हुआ था और वह लोक साहित्य अपने देश की सभी मातृभाषाओं में मौजूद है। इसलिए यह साहित्य जनभावनाओं को अभिव्यक्त करता है और तत्कालीन समय में आजादी के लिए प्रेरित करता यह प्रतिबंधित साहित्य आज के वर्तमान समय में भी बहुमूल्य धरोहर है। समय की मांग यह है कि इस दिशा में सरकारी एवं गैर सरकारी संस्थाओं द्वारा प्रतिबंधित साहित्य के क्षेत्र में उचित ध्यान दिया जाए। यदि ऐसा होता है तो हिंदी साहित्य के क्षेत्र में विविधता

BIHAR SHODH SAMAAGAM
Multidisciplinary, Multi-Lingual, Peer Reviewed Open Access Journal
issn : 3048-6971
Vol. 2, Issue 4, October-December 2024
Available online : https://www.biharshodhsamaagam.com/

तो आएगी ही साथ ही हिंदी साहित्य और भी समृद्ध हो जाएगा। यदि हिंदी साहित्य की दशा और दिशा को सुदृढ़ करना है तो वर्तमान लेखकों, आलोचकों को प्रतिबंधित साहित्य की उचित व तर्कसंगत समीक्षा करनी ही होगी।

संदर्भ सूची-

1. उपाध्याय डॉ. विश्वामित्र, भारतीय क्रांतिकारी आन्दोलन और हिंदी साहित्य, प्रगतिशील जन प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण- 1989, पृ. सं. 275.
2. वही, पृ. सं. 395.
3. वही, पृ. सं. 399.
4. वही, पृ. सं. 401.
5. वही, पृ. सं. 402.
6. वही, पृ. सं. 406.
7. अहीर राजीव, आधुनिक भारत का इतिहास, स्पेक्ट्रम बुक्स प्रा. लि., नई दिल्ली, पूर्णतया संशोधित एवं परिमार्जित संस्करण- 2018, पृ. सं. 569.
8. यह किताब क्यों और कैसे? लोकगीतों और गीतों में 1857, संकलन और संपादन- मैनेजर पाण्डेय, राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत, दूसरा संस्करण- 2015, नई दिल्ली, पृ. सं. 28.
9. द्विवेदी देवनारायण, भूमिका, मैनेजर पाण्डेय, देश की बात, स्वराज प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण- 2013, पृ. सं.08.